अध्याय १

" अज्ञेय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

अध्याय - 1

अज्ञेय - व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व

अज्ञेय - व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व :-

"अज्ञेय" के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का परिचय करना आवश्यक है। "अज्ञेय" के उपन्यासों में चित्रित मानव जीवन के तत्त्वज्ञान का अध्ययन ही उनका प्रमुख विषय रहा है। इसीलिए साहित्यकार की कृति का मूल्यांकन करने के लिए उसके जीवन को जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। "अज्ञेय" के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व का थोड़े में परिचय इसप्रकार है।

जीवनवृत्त :-

हिन्दी साहित्य में "अज्ञेय" का नाम बहुत प्रसिध्द हो चुका है। "अज्ञेय" इस नाम को बहुत से लोग उपनाम न समझकर इसे पूरा नाम ही समझते है। लेकिन उनका वास्तविक नाम सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन है। उनके पिता का नाम हीरानन्द वात्स्यायन है। "अज्ञेय" का जन्म 7 मार्च, सन 1911 को उत्तरप्रदेश में गोरखपुर से लगे हुए देवरिया जिले के "कसिया" नामक ग्राम में हुआ था पर कसिया का संस्कृत नाम "कुशीनगर" है और भगवान बुध्द ने इसी स्थान पर निर्वाण प्राप्त किया था।

वात्स्यायनजी सारस्वत गोत्रीय पंजाबी ब्राहमण है। और "अज्ञेय" के पिता श्री हीरानन्दजी पुरातत्व विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे। आपके दादा संस्कृत के विद्वान थे। पिताजी की नौकरी के कारणवश अज्ञेय को बचपन से ही श्रीनगर, नालन्दा, पटना, लाहौर, लखनऊ, बडौदा, ऊटकमंड और मदरास

आदि स्थानों में घूमने का अवसर मिला। और इसी कारण "अज्ञेय" को अनेक विद्वानों के संपर्क में रहने का अवसर मिला। परंतु सन 1946 में श्री हीरानन्दजी की मृत्यु गुरूदासपुर में हो गयी।

"अज्ञेय" की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी का ज्ञान उन्हें घर पर ही मिला। "श्री अज्ञेय" का प्रारंभिक जीवन शान्त, प्रकृति की गोद और विद्वान पिता की छाया में व्यतीत हुआ है। इसलिए प्रकृति के एकान्त सौन्दर्य के प्रति प्रबल आकर्षण और स्वतन्त्र चिन्तन की प्रवृत्ति आपका संस्कार बन चुकी है। बौध्दिक परिष्कार और सांस्कृतिक सौन्दर्य चेतना आपके व्यक्तित्त्व संघटन के प्रमुख उपादान हैं।"[1] सन 1925 में "अज्ञेय" हाईस्कूल और सन 1927 में इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। और बाद में सन 1929 में लाहोर ﴾पंजाब﴿ के फारमन कालेज से बी·एस·सी· की परीक्षा उत्तीर्ण की।

इसी बीच लाहोर में अमेरिकी प्रोफेसर जे·एम·बनेड और प्रोफेसर डेनियल से "अज्ञेय" का सम्पर्क हुआ। उन्हें अंग्रेजी साहित्य, बाइबिल ज्ञान और रविन्द्रनाथ ठाकुर के अध्ययन के लिए स्वर्णपदक प्राप्त हुआ। बाद में सन 1929 में "अज्ञेय" ने एम·ए· प्रथम वर्ष ﴾अंग्रेजी﴿ में प्रवेश लेने के बाद लाहोर में उनके क्रांतिकारी जीवन का आरंभ हुआ। लगभग पाँच वर्षो तक "अज्ञेय" ने क्रांतिकारी जीवन बिताया और इसी बीच हिन्दुस्थान सोशालिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य बनने पर उनका आजाद सुखदेव, भगवतीचरण बोहरा आदि से परिचय हुआ। "अज्ञेय" के क्रांतिकारी जीवन की अवधि का अधिकांशतः इतिहास देश के इतिहास से सम्बध्द है। इनके क्रांतिकारी जीवन की अवधि 1929 से 1936 तक की है। इसी बीच "अज्ञेय" एक लेखक के रूप में जाने लगे है। हिन्दी जगत् में उनका एक स्थान निश्चित हो चुका है। सन 1930-31 के समय में "अज्ञेय" जेल में थे। स्वयं अज्ञेय भी इसी मत के हैं। वे लिखते हैं कि उन्होंने "जेल जाने के बाद से जोरों से लिखना शुरू किया। उपन्यास, कहानी, कविता, निबन्ध - सभी कुछ।··· इस समय से फिर लेखन का क्रम बराबर चलता रहा। ···· मैं अपने रचना काल का प्रारंभ

तभी से मानता हूँ।"[2]

अमृतसर में फैक्टरी कायम करने का काम करते वक्त यहीं देवराज और कमल कृष्ण के साथ 15 नवम्बर 1930 को गिरफ्तार हुए। गिरफ्तारी के बाद एक महीने लाहौर किले में रहे, फिर अमृतसर की हवालात में रहना पड़ा। 1934 के मध्य में घर के अन्दर ही उन्हें नजरबन्दी हो गई। और घर आने पर एक साथ छोटे भाई की मृत्यु और माता की मृत्यु का पता चल जाता है। साथ ही पिताजी की नौकरी से निवृत्ति आदि सभी घटनाओं के कारण उनके मन में हलचल मच गई। नजरबन्दी हटने तक इन्हें डलहौजी और लाहौर में ही रहना पड़ा। सात साल का समय उन्हें इस तरह से काटना पड़ा।

अपनी उपजीविका चलाने के लिए उन्होंने काम करना शुरू किया। सन 1936 ई॰ से लेकर कुछ समय तक वे आगरा के समाचारपत्र "सैनिक" के सम्पादकीय विभाग में काम करते रहे। बाद में मेरठ के किसान आंदोलन में काम करने लगे। सन 1937 ई॰में बनारसीदास चतुर्वेदी के आग्रह पर "विशाल भारत" (कलकत्ता) के संपादकीय विभाग में काम करने लगे। एक डेढ़ वर्ष के बाद कुछ समय तक वह पिता के पास बडोदा में रहने लगे और पिताजी की इच्छानुसार विदेश जाकर अध्ययन पूरा करने की योजना बनाने लगे। किन्तु बीच में युध्द छिड जाने के कारण उनकी यह अभिलाषा अधूरी ही रही। जुलाई 1940 में "अज्ञेय" ने संतोष के साथ शादी की। परंतु कुछ ही दिनों के बाद उनका संबंध टूट गया। सन 1947 से वह इलाहाबाद से "प्रतीक" का प्रकाशन करने लगे। "प्रतीक" का घेरा बहुत ही बढ़ा था। "प्रतीक" ने नये साहित्य को मान्यता दी, नये आलोचक निर्माण किये। लेकिन आगे "प्रतीक" न चल सका।

सन 1955 ई॰ में युनेस्को के निमंत्रण पर पश्चिमी युरोप की यात्रा की, इस यात्रा ने कई रचनाओं के निर्माण की प्रेरणा उन्हें मिल गई। 7 जुलाई 1956 में उनकी दूसरी शादी कपिला मलिक से हुई और वे प्रयाग में रहने लगे।

अगस्त 1957 में जापान और फिलिपिन की यात्रा की। स्वदेश लौटने पर सन 1960 तक दिल्ली में रहे। अप्रैल 1960 में दूसरी बार युरोप की यात्रा की। 1961 के सितंबर में अमेरिका के कॅलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति और साहित्य" के अध्यापक बनकर गये, जुलाई 1964 में स्वदेश लौटते ही वे अस्वस्थ हो गये। उन्हें दिल का दौरा पड़ा। इस बीमारी के बाद वे पहले की अपेक्षा दुःख का आघात सहने में अधिक समर्थ बने। कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे और धैर्यशील बने।

दिल्ली से प्रकाशित होनेवाले "दिनमान" साप्ताहिक का सम्पादन उन्होंने फरवरी 1965 में किया। छः महिने के अन्दर ही "दिनमान" को उनकी कल्पना और निष्ठा ने हिन्दो का श्रेष्ठ साहित्यिक पत्र बना दिया। साहित्य अकादमी ने सन 1965 में पाँच हजार रूपये का प्रथम पुरस्कार उनकी काव्यकृति "आंगन के पार द्वार" के लिए घोषित कर सम्मानित किया। 1966 में "अज्ञेय" पूर्व युरोप की यात्रा के लिए निकल पडे। इस यात्रा में वे रूमानियाँ, युगोस्लाव्हिया रूस और मंगोलिया भी गए। युगोस्लाव्हिया में नोबेल पुरस्कार विजेता आन्द्रिचे तथा स्लोवेनी कवि मार्तइ बीर से मिले। वहाँ उन्होंने हिन्दी कविता और उपन्यास के युगोस्लाव्ह अनुवाद तथा युगोस्लाव्ह कविता और उपन्यास के हिन्दी अनुवाद की योजना बनाई। 1966 में हो विदेशसे लौटने पर "अज्ञेय" ने बिकानेर, अलमेर, सिमला, दिल्ली और एर्नाकुलम के आयोजनों में भाग लिया। समस्त भारतीय आधुनिक हिन्दी साहित्य के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये।

जनवरी 1967 में ऑस्ट्रेलिया में "एशियाई देशों में साहित्य विनियम" शीर्षक विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमें उन्होंने भारतीय प्रतिनिधि के अधिकार से भाग लिया। अन 1967 में ही "अज्ञेय" का पहला नाटक "उत्तर प्रियदर्शी" रंगमंच पर आ गया। इसी वर्ष उनके एक उपन्यास का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित हुआ। आश्चर्य की यह बात है कि, "अज्ञेय" विदेश यात्रा करते रहे थे और उनकी लेखनी बिना रूके साहित्य निर्मिती में लगी हुई थी।

सन 1971 में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने उन्हें डी·लिट· की मानद उपाधि दे दी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग में उन्हें वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया। 1972 में उत्तरप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपको "विद्यावारिधि" उपाधि दी।

"अज्ञेय" का व्यक्तित्त्व बहुमुखी और संश्लिष्ट होने के कारण इस परिचय में उसे पूरी तरह से समाहित नहीं किया जा सकता और ऐसा हमारा दावा भी नहीं है। "अज्ञेय" को 1978 को "भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार" "कितनी नावों में कितनी बार" इस कविता संकलन को मिला।

"अज्ञेय" के व्यक्तित्त्व में विद्वत्ता तथा गंभीरता के साथ सरलता का भी संयोग हुआ है। आप सरलता, मृदुभाषिता और नम्रता की दूसरी मूर्ति थे। विनोदप्रियता आपके स्वभाव का एक अंग था। आपके वक्तृत्त्व में श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने की अपूर्व क्षमता थी। 4 अप्रैल 1987 ई· को इस महान साहित्यकार का निधन हुआ।

कृतित्त्व :-

"अज्ञेय" का हिन्दी साहित्य को महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आपने काव्य संकलन, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विविध क्षेत्रों में अपने पांडित्य एवं प्रतिभा का दर्शन करा दिया है। आपकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित हैं। -

क· **काव्य संकलन :-**

1· भग्नदूत (1933)

2· चिन्ता (1941)

3· इत्यलम् (1946)

4· हरी घास पर क्षण भर (1949)

5· बावरा अहेरी (1954)

6· इन्द्रधनुष रौंदे हुए थे §1957§

7· अरी ओ करुणा प्रभामय §1959§

8· आँगन के पार द्वार §1961§

9· आज के लोकप्रिय कवि-स·ही·वात्स्यायन "अज्ञेय" §डॉ·विद्यानिवास मिश्रद्वारा सम्पादित, 1963§

10· पूर्वा §1965§

11· सुनहले शैवाल §1966§

12· कितनी नावों में कितनी बार §1967§

13· क्योंकि मैं उसे जानता हूँ §1970§

14· सागर मुद्रा §1970§

15· पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ §1974§

16· महावृक्ष के नीचे §1977§

ख· सम्पादित काव्य संकलन :-

1· तारसप्तक §1943§

2· दूसरा सप्तक §1951§

3· पुष्करिणी §1959§

4· तीसरा सप्तक §1959§

5· रूपाम्बरा §1960§

6· चौथा सप्तक §1979§

ग· उपन्यस :-

1· शेखर : एक जीवनी भाग - 1 §1941§

2· शेखर : एक जीवनी भाग - 2 §1944§

3· नदी के द्वीप §1951§

4· अपने अपने अजनबी §1961§

घ· **कथा संकलन :-**

1· विपथगा (1937)

2· परम्परा (1944)

3· कोठरी की बात (1945)

4· शरणार्थी (1947)

5· जयदोल (1951)

6· अमरवल्ली और अन्य कहानियाँ (1954)

7· कडियाँ और अन्य कहानियाँ (1957)

8· अज्ञेय की कहानियाँ भाग - 3 (1961)

9· अज्ञेय की कहानियाँ भाग - 4 (1961)

10· ये तेरे प्रतिरूप (1961)

11· लौटती पगडंडियाँ (1975)

12· छोडा हुआ रास्ता (1975)

ड· **नाटक :-**

1· नए एकांकी (सम्पादित, 1952)

2· उत्तर प्रियदर्शी (नाटय् काव्य 1967)

च· **निबंध एवं विचारात्मक गद्य :-**

1· त्रिशंकु (1945)

2· सबरंग (1956)

3· आत्मनेपद (1960)

4· आधुनिक हिन्दी साहित्य (1965)

5· सबरंग और कुछ राग (1966)

6· हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य (1967)

7· आलवाल (1971)

8· लिखि कागद कोरे (1972)

9· भवन्ती (1972)

10· अन्तरा (1975)

11· जोगलिखी (1977)

12· अद्यतन (1977)

13· संवत्सर (1978)

14· स्त्रोत और सेतु (1978)

छ· **यात्रा संस्मरण :-**

1· अरे यायावर रहेगा याद (1953)

2· एक बूँद सहसा उछली (1961)

झ· **पत्रकारिता :-**

1· सैनिक (साप्ताहिक, 1936-37)

2· विशाल भारत (मासिक, 1937-39)

3· भारती (मासिक, 1941)

4· प्रतीक (मासिक, 1947-52)

5· वाक् (त्रैमासिक 1950)

6· दिनमान (साप्ताहिक, 1965)

7· नया प्रतीक (मासिक, 1974)

8· नवभारत टाइम्स (दैनिक, 1977)

ज· **अंग्रेजी में लेखन :-**

1· श्रीकांत (शरतचंद्र के मूल बंगला उपन्यास का अनुवाद, 1944)

2· द रेजिग्नेशन (जैनेन्द्रकुमार के उपन्यास "त्यागपत्र" का अनुवाद, 1946)

3· प्रिजन डेज एण्ड अदर पोयम्स ॥काव्य संकलन 1946॥

विशिष्ट पुरस्कार :-

साहित्य अकादमी पुरस्कार :- "आँगन के पार द्वार"
॥कविता संकलन, 1964॥

ज्ञानपीठ पुरस्कार :- "कितनी नावों में कितनी बार"
॥कविता संकलन, 1978॥

साहित्यिक व्यक्तित्व :-

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन का उपनाम "अज्ञेय" था। वे कवि, लेखक, पत्रकार और क्रांतिकारी विचारक थे। अज्ञेय जब दिल्ली जेल में थे तब उनकी दो कहानियों को जैनेंद्रकुमारजी के हाथों प्रेमचंद के "जागरण" पाक्षिक के लिए भेजा गया। प्रेमचंदजी ने लेखक का नाम जब पूछा तब जैनेन्द्रजी ने "अज्ञेय" बताया तब से यही नाम उन्हें प्राप्त हुआ। "अज्ञेय" का अर्थ होता है जो जाना नहीं जा सकता। वे अपना ॥सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन॥ स·ही· वात्स्यायन यह नाम गद्यलेखन, संपादक के नाते अन्य सब व्यवहारों में प्रयुक्त करते थे। कविता, कहानी, उपन्यास आदि के लेखन के लिए "अज्ञेय" नाम लिखते थे। इसप्रकार उनके व्यक्तित्त्व के दो हिस्से थे।

1· व्यावहारिक वात्स्यायन और

2· रहस्य ओढे हुए "अज्ञेय"

इसप्रकार के दोहरे व्यक्तितत्त्ववाले वात्स्यायन हमेशा, अलग-अलग लोगों की दृष्टि में अलग-अलग रूपों में प्रकट होते रहे। पिता के साथ उनके संबंध प्यार और तिरस्कार मिश्रित थे। उनके पिता अनुशासनप्रिय, ममताभरे क्रोधवाले और पुराने पंडितों की तरह हर विवरण के विषय में सावधान थे। वात्स्यायनजी सन 1937 से ही क्रांतिकारियों के साथ ही हो गये थे। और वहीं उन्होंने लेखन की शुरूआत की थी।

लेखक के तीन प्रकार होते हैं -

"1· वे जो परिवार में बंधे रहते हैं।

2· वे जो परिवार से अलग रहते हैं।

3· परिवार में रहकर भी अपारिवारिक की तरह रहते हैं।"[3]

क्रांतिकारी आन्दोलन और जेल के एकांतवास के कारण उनका व्यक्तित्त्व रेशम के कीडे की तरह बन गया। उनकी वृत्ति भ्रमर की तरह थी। वे घुमक्कड प्रवृत्ति के थे। लेकिन एक साथ पारिवारिक वात्सल्य और ममता भी दिखाते थे। और परिवार से एकदम अलग भी हो जाते थे। वे बहुज्ञ थे, कई भाषाओं को वे जानते थे, पंजाबी उनकी मातृभाषा थी। आर्य समाजी प्रभाव के कारण घरपर संस्कृत और शुध्द हिन्दी में बालते थे। उर्दू, बंगाली, गुजराती, तामिल भाषा भी बोलते थे। उन्होंने फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी का साहित्य भी पढ़ा था। वे बढईगिरी, दर्जीगिरी, यंत्रों के अनेक उपयोग जानते थे। सभी प्रकार के वाहन चलाना जानते थे। पदयात्रा से लेकर सायकिल, मोपेड, ट्रक, जीप, कार चलाते थे। तथा इंजन, घुडसवारी, उंट की सवारी और हाथी की सवारी भी करते थे। आपने इस ओर संकेत करते हुए लिखा है - "क्योंकि हम सबका बाल्यकाल अधिकतर वन-पर्वतों या देहाती प्रदेशों मे बीता, सभी ने स्वतन्त्र या आत्मनिर्भर स्वभाव पाया, प्रायः सभी किसी हदतक अन्तर्मुख हो गए - अर्थात् अनुभव अधिक करते हैं, भाव प्रदर्शन कम।"[4]

उनका नदी, पर्वत, जंगल, समुद्र का ज्ञान बहुत बडा थी। शिल्पकला स्थापत्यकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य तथा नाटयकला में उनकी गहरी रूचि थी। फोटोग्राफी भी वे अच्छी तरह से जानते थे। फिल्म बनाने का शिक्षण उन्होंने फ्रान्स में लिया था। ज्ञान विज्ञान के हर विषय में वे रूचि लेते थे। वे अंग्रेजी अच्छी लिख लेते थे। सबसे पहले वे क्रांतिकारीयों की ओर आकृष्ट हुए। "अज्ञेय" बहुत श्रमशील लेखक थे। अपनी और दूसरों की भी पांडुलिपि बहुत बारीकी से वे पढते थे और संपादित करते थे। वे बहुत विनोदप्रिय थे। उन्हें जब क्रोध आता था

तो वे अनियंत्रित हो जाते थे।

साहित्यिक विवादों में वे कभी नहीं पडते थे। उनके व्यक्तित्व में गरिमा और भव्यता थी। इसी कारण से उनके संबंध में भय-मिश्रित कुतूहल या आतंक छाया रहता था। वे एक अध्ययनशील व्यक्ति थे। उनकी रचनाओं को देखने के बाद उनके गहन, विशाल अध्ययन और चिंतन का परिचय मिलता है। पाश्चात्य साहित्य के साथ-साथ उन्होंने यहाँ के धर्म, संस्कृति, दर्शन और साहित्य का गहरा अध्ययन किया था। उनकी प्रतिभा का एक विशेष रूझान था। अपनी आत्मानुभूति के आधारपर ही वे रचनाओं का निर्माण करते थे।

प्रेरणा एवं प्रभाव :-

लेखक की साहित्य-वस्तु की प्रेरणा का स्त्रोत समाज का जो वर्ग बनता है, उसी वर्ग के जीवन, नियम, आचरण, रीतियाँ, समस्याएँ और धारणाएँ आदि का चित्रण उनके साहित्य में मिलता है। "अज्ञेय" के उपन्यास साहित्य में साहित्य-वस्तु के जो प्रेरणास्त्रोत है और उस वस्तु के प्रस्तुत करने का जो विशिष्ट रीतिवाद है - दोनों ही उन्हें जागरूक अभिजात वर्ग का लेखक सिध्द करते हैं।

"अज्ञेय" के उपन्यास पढते समय समाज के एक विशिष्ट प्रकार के वर्ग का ज्ञान होता है। यह वर्ग शिक्षित लोगों का हैं। जिनका रूप बहुत पुराना नहीं है। ज्ञान, शिक्षा, सत्ता और सुविधा के विशेष अवसर प्राप्त लोगों का यह वर्ग है। इस वर्ग की अपनी रीतियाँ विकसित हो रही हैं। इस कारण से इन्हें जागरूक अभिजात वर्ग का नाम दिया जा सकता है। "अज्ञेय" के उपन्यासों में भारतीय जनता और इस अभिजात वर्ग का अलगाव बडी तीव्रता से दिखाई देता है। उनकी साहित्य वस्तु के प्रेरणास्त्रोत इस अभिजात वर्ग में ही मिलते हैं।

"शेखर : एक जीवनी" का शेखर जिन लोगों से घिरा है, वे सभी समाज में समृध्द तब के से आए है। यह परिश्रम करनेवाला वर्ग नहीं है। इन्हें किसी भी हालत में जनता नहीं कहा जा सकता। ये सभी पात्र प्रबुध्द अभिजात

वर्ग के है और परिणामी है। शेखर भी इसी वर्ग का पात्र है - परिणामी है। इस पात्रों के सामान्य जनता से भिन्न अपने तौर-तरीके और आचरण रीतियाँ है। इस वर्ग में भी भिन्नता के स्तर है, लेकिन यह भिन्नता उनके अपने वर्ग के अंतर्गत भिन्नता है, वर्गीकरण की भिन्नता नहीं।"[5]

भारतीय समाज को जब अज्ञेय ने गहराई से देखा तो उन्हें भारतीय समाज ज्ञान के बारे में पिछडा हुआ दिखाई दिया। "अज्ञेय" ने अपने साहित्यनिर्मिती में भारतीय समाज की ओर संकेत किया है। भारतीय समाज, ज्ञान और लोगों के पिछडेपन को लेकर "अज्ञेय" के साहित्य में एक विशेष प्रकार की उदासीनता दिखाई देती है। "अज्ञेय" ने मौका मिलते ही पिछडे हुए भारतीय समाज में उन्हें न समझनेवाले लोगों पर प्रहार किये हैं।

"अज्ञेय" कविता पर पाश्चात्य प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने "आत्मनेपद" में यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है - "मेरी कविता हिन्दी में लिखी गई अंग्रेजी कविता है, ऐसा कहकर कुछ लोग समझते हैं कि, उन्होंने प्रशंसा की है, कुछ समझते हैं कि, महानिन्दा है। मैं तो नहीं समझता कि मेरी कविता में ऐसा कुछ है जो भारत की ही काव्य परंपराद्वारा अनुमोदित न हो सकता है।"[6] "अज्ञेय" की प्रारंभिक रचनाओं पर अंग्रेजी कवि टेनिसन, ब्राउनिंग, लारैन्स, इलियर आदि कवियों की कविता का प्रभाव हैं।

"अज्ञेय" पर फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक दर्शन का प्रभाव पडा है। यही प्रभाव उनके कथा साहित्य में भी दिखाई देता है। "अज्ञेय" के कथासाहित्य के साथ "मनोवैज्ञानिक" लेबल चिपक गया है। "अज्ञेय" के साहित्य में मनोविज्ञान के प्रभाव का जहाँ तक प्रश्न है वह कविता से अधिक कथा साहित्य में अनेक ढंग से व्याप्त दिखाई देता है। फ्रायड के मनोविश्लेषण, विशेषतः स्वप्नविश्लेषण से प्रभावित जो साहित्यिक आंदोलन दो विश्वयुध्दों के बीच में फ्रान्स में पनपा, वह था सुररियालिज्म (Surrealism) अतियथार्थवाद। फ्रायड के उपचेतन मन के सिध्दान्त की भूमिका पर यह अवस्थित है।

"अज्ञेय" के कथासाहित्य में दिखाई देनेवाला मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण फ्रायड से प्रभावित है। "अज्ञेय" के प्रथम उपन्यास "शेखर : एक जीवनी" में विशुध्द मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से शिशु मानस का सफल निरूपण हुआ है। "अज्ञेय" के सभी पात्र अहं भाव से प्रभावित होने कारण व्यष्टिवादी है। "अज्ञेय" ने आधुनिकता को अधिक गहरे रूप में स्वीकारा है। "शेखर : एक जीवनी" की घटनाएँ शेखर की विचारधारा के साथ-साथ चलती है। उनका अपना कोई महत्त्व नहीं। शेखर का व्यक्तित्त्व सर्वोपरि है। मनोविश्लेषणात्मक पध्दति के निर्वाह स्वरूप अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में बौध्दिकता को सर्वोपरि स्थान दिया है। भावुकता को कम महत्त्व दिया है। "शेखर के बचपन का उस पर पडनेवाली छापों का - लेखक विदग्ध चित्रण किया है और ऐसे जीवन-चित्र को लेकर लिखा गया यह पहला हिन्दी उपन्यास है। लेखक ने बाल्यकालीन प्रसंगों के चित्रण में जिस अन्तर्दृष्टि का परिचय दिया है, वह कुछ सिध्द निष्कर्षो के आग्रह के कारण धुँधला गयी है। माँ के सम्बन्ध को लेकर तो वह एक मनोवैज्ञानिक निदर्शन भर रह गया है। माँ के प्रति शेखर की घृणा की "इडिपस कॉम्प्लेक्स" के मनोवैज्ञानिक सिध्दान्त से व्याख्या की जा सकती है।"[7] फ्रायड के "अहंभाव" और "यौन भावना" का भी प्रभाव "अज्ञेय" के उपन्यासों में पूर्ण रूप से प्रवाहित होता हुआ दिखाई पड़ता है। लेकिन मानवीय संवेदनाओं का प्रभाव भी उनके उपन्यासों में परिलक्षित होता है। "अज्ञेय" ने जिस समय "शेखर : एक जीवनी" की रचना की, वह राष्ट्रीय चेतना का युग था और इसी के प्रभाव स्वरूप शेखर का पूर्ण एवं आंशिक रूप में भुवन का चित्रण एक क्रान्तिकारी के रूप में ही हुआ है।

जैनेन्द्र और इलाचंद्र जोशी उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण लेकर चले हैं उसी समय "अज्ञेय" का हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में पदार्पण होता है। आधुनिक उपन्यासों में मनोविज्ञान के प्रयोग से उसके कलेवर में पर्याप्त अन्तर आया। "अज्ञेय" के पदार्पण से पूर्व मनोविज्ञान का उपयोग एक बहुत ही निरपेक्ष ढंग से किया गया है। किन्तु "अज्ञेय" ने जैनेन्द्र और इलाचन्द्र जोशी दोनों की कला को

एक समन्वित एवं श्रेष्ठ रूप में परिलक्षित किया है। "अज्ञेय" का मनोविश्लेषण सैध्दान्तिक एवं व्यावहारिक अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से सर्वथा श्रेष्ठ, परिनिष्ठत, कलात्मक तथा प्रभावोत्पादक है।

"अज्ञेय" के उपन्यासों का वैशिष्टय :-

वास्तविकता तो यह है कि आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के संदर्भ में "अज्ञेय" का कथा साहित्य देखा जाय तो वह एक ओर भारतीय जनजीवन, भारतीय जनजीवन की चेतना तथा विषमताओं आदि का यथार्थ चित्रण करता है। तो दूसरी ओर अपनी शैलीशिल्प तथा मानवमन की शाश्वत अनुभूतियों को कलात्मक ढंग से स्पष्ट करता है। "अज्ञेय" के कथा साहित्य में आधुनिक युग का यथार्थ और पूर्ण प्रतिबिंब दिखाई देता है। शिल्पविधान की दृष्टि से अथवा भावविधान की दृष्टि से "अज्ञेय" का कथासाहित्य आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में "अज्ञेय" का एक विशेष स्थान है। उनके पूर्ववर्ती और उनके बाद के काल के उपन्यासों की तुलना में परिमाण की दृष्टि से थोडा लिखने के बाद भी "अज्ञेय" ने हिन्दी साहित्य परंपरा में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है।

1· शेखर : एक जीवनी :-

"अज्ञेय" प्रेमचन्दोत्तर युग के विशिष्ट उपन्यासकारों में से हैं। "अज्ञेय" ने "शेखर : एक जीवनी" के माध्यम से हिन्दी उपन्यास जगत् में प्रवेश किया और हिन्दी उपन्यास ने एक नये युग में प्रवेश किया। संभावनाओं की दृष्टि से सांकेतिक रूप में इसका महत्त्व अधिक है। "अज्ञेय" एक प्रयोगवादी साहित्यिक थे। सभी रचनाओं में उन्होंने नये-नये प्रयोग किये।

"शेखर : एक जीवनी" "अज्ञेय" का सर्वप्रथम उपन्यास है, जो दो भागों में प्रकाशित हुआ है। कथा-शिल्प की दृष्टि से यह नयी पीढ़ी की प्रवर्तक औपन्यासिक कृतियों में माना जा सकता है, क्योंकि आगे लिखे गये अनेक उपन्यासों

पर इसकी स्पष्ट छाया मिलती है। उपन्यास की कथा को आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है।"[8] "शेखर : एक जीवनी" में एकत्रित पीडा को सिर्फ एक रात में देखे दृश्य को शब्दांकित करने का प्रयत्न है। "शेखर : एक जीवनी" में मनोविश्लेषण के द्वारा एक विशेष विचारतत्त्व के निर्माण का प्रयत्न भी है। इस उपन्यास में शेखर नामक विद्रोही व्यक्ति के मनोविश्लेषण की कथा है। "शेखरः एक जीवनी" की कथा एकदम अलग है। जीवन की विविधताओं एवं जीवन के विभिन्न पक्षों के प्रति उसकी विद्रोह -भावना ही इस उपन्यास के कथानक का प्रधान आधार है। "शेखर : एक जीवनी" एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अपने हृदय में रूढिगत सिध्दांतो तथा तद्जनित भावनाओं के प्रति एक अदम्य विद्रोह भावना पाता है। उसके जीवन का विकास उसकी समस्त जागरूकता के साथ होता है। वह अपने बचपन की अनेक घटनाओं का लेखा-जोखा करता है। उसकी यह तर्क-प्रवृत्ति उसकी अहंभावना का एक अंग है।"[9]

इस उपन्यास का कथानक सुनियोजित ढंग का नहीं है। इतनाही नहीं अलग-अलग दिशा तथा गतियों का विश्लेषण है। यही विश्लेषण उपन्यास को कथा का रूप देता है। शेखर के शैशव काल से उपन्यास का प्रारंभ होता है। और जीवन के अंत तक कुछ प्रमुख तथा आकर्षक जीवन चित्र इसमें आ जाते है। शेखर के शैशवकालीन चित्रण में "अज्ञेय" ने अपने जीवन की अनेक घटनाओं को चुना है। फिर भी शेखर लेखक के व्यक्तित्त्व का दूसरा रूप नहीं है। "अज्ञेय" मानते है "शेखर" जीवन दर्शन में "स्वातंत्र्य खोज" है। शेखर के स्वातंत्र्य की खोज में टुटी हुई नीतिविषयक परंपरा के बीच नीति के मूल स्त्रोत की खोज है।

इस उपन्यास पर फ्रायडवादी विचार दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। "अहं, भय और काम ये तीन मुलभूत प्रवृत्तियाँ शेखर के चरित्र निर्माण में कहीं मदद करती है तो कहीं बाधायें डालती है। शेखर के चरित्र निर्माण में बौध्दिकता का विरोध अबौध्दिकता ने किया है। उसके विकास में भय और

काम बाधा डालते हैं और उसके अहं पर प्रहार करते हैं। इस उपन्यास ने व्यक्तिवाद के साथ सामाजिकता भी आ गई है। जहाँ व्यक्तिवाद का आधार विज्ञान है वहाँ सामाजिकता का आधार आवेग है। "शेखर : एक जीवनी" एक प्राणवान क्रान्तिकारी की अपनी जीवन-यात्रा के अन्तिम पड़ाव की स्थिति फाँसी की छाया में - अपने विगत जीवन का प्रत्यावलोकन है।"[10]

2· **नदी के द्वीप :-**

"अज्ञेय" का यह दूसरा उपन्यास है। यह खंड रूप में लिखा गया उपन्यास है। इसमें कथात्मक एकता की दृष्टि से विभिन्न पात्रों का परस्पर पत्रव्यवहार और अंतराल दिखलाया गया है। जैसे "शेखर : एक जीवनी" आत्मकथात्मक ढंग से लिखने के कारण इस युग की महत्त्वपूर्ण कृति है, उसी प्रकार "नदी के द्वीप" खंड रूपों में लिखे गये उपन्यासों में महत्त्पूर्ण स्थान पाता है। इस उपन्यास का प्रकटीकरण पक्ष विशेष शक्तिशाली है। शिल्प विधान की दृष्टि से यह उपन्यास अद्वितीय है। "नदी के द्वीप" का कथानक अत्यन्त संक्षिप्त है लेकिन अज्ञेय की सूक्ष्म तथा कलात्मक विश्लेषणप्रिय प्रतिभाने इसे एक उपन्यास का स्वरूप प्रदान किया है। कथानक के इस विस्तार के मूल में लेखक की कविचेतना ही है, जो स्थूल कथांशों को गति देती हुई सूक्ष्म एवं भावनात्मक अंशों में रम जाती है।"[11]

"नदी के द्वीप" की कथा का विकास चार पात्रों के इर्द गिर्द ही हुआ है। इसकी कथा चार प्रधान पात्र-पात्रियों के चरित्र को आधार बनाकर चलती है। इनमें से एक को प्रधानता देकर इस कथा का विकास हुआ है। बीच में कथा को सूत्रबध्द करने तथा कथात्मक एकता की रक्षा करने के लिए विविध पात्रों के पारस्परिक पत्र-व्यवहार तथा अन्तरालों का आश्रय भी लिया गया है। खण्ड-कथा रूप में लिखे गये उपन्यासों में "नदी के द्वीप" का स्थान विशिष्ट है। इस उपन्यास की कथा को कई खण्डों मे विभक्त किया गया है। कथा का नायक भुवन है, जिसे केन्द्र बनाकर उपन्यास का ढाँचा तैयार किया गया है। उपन्यास में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक इसी प्रधान कथासूत्र की प्रमुखता है। पूरी

तरह से कथा का विस्तार हो गया है। साथ ही लेखक की संवेदनशीलता ने उपन्यास के प्रभाव को अखंड बनाये रखने का प्रयत्न किया है।"

"नदी के द्वीप" की सबसे बडी उपलब्धि आधुनिक नारी के अंतर्मन की गहनतम प्रवृत्तियों एवं भावनाओं को सूक्ष्म विश्लेषण है। श्री नेमिचन्द जैन के शब्दों मे - आधुनिक नारी के व्यक्तित्त्व के इतने विविध पक्ष इतनी गहराई और सूक्ष्मता के साथ अपने आगे प्रत्यक्ष कर सकता और फिर उसे शब्दबध्द कर सकना अपने आप में एक बडी साहित्यिक उपलब्धि है।"[12]

"नदी के द्वीप" में बहुत कुछ शेखर का विकसित रूप दिखाई देता है। "नदी के द्वीप" का भुवन शेखर का ही विकसित रूप है जो नायक के रूप में स्थापित हुआ है। यहाँ "अज्ञेय" का दृष्टिकोण व्यक्ति और समाज के संघर्षो से हट जाता है। और नीतिविषयक समस्याये तथा प्रेम कथायें आदि तक वह मर्यादित हो जाता है। "नदी के द्वीप" खुले आम एक प्रेम कथा है। आत्मविचार और दर्शन की दृष्टि से उपन्यास का सबसे अधिक सशक्त अंश है, इस उपन्यास का समाप्ति भाग। गौरा को पत्र लिखते-लिखते एकाएक भुवन उद्विग्न हो उठता है और उपन्यास की समाप्ति हो जाती है।

3· **<u>अपने-अपने अजनबी :-</u>**

"अज्ञेय" का अब तक का यह अंतिम उपन्यास है। इसमें मृत्यु-क्षणों के संदर्भ में मानव-मन का विश्लेषण किया गया है। पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर अंकित है - "मृत्यू को सामने पाकर कैसे प्रियजन भी अजनबी हो जाते हैं और अजनबी एक पहचानेहुए कैसे इस चरम स्थिति में मानव का सच्चा चरित्र उभरकर आताहै - उसका प्रत्यय, उसका अदम्य साहस और उसका विमल अलौकिक प्रेम भी वैसे ही और उतने ही अप्रत्याशित ढंग से क्रियाशील हो उठते है जैसे उसकी निम्नतर प्रवृत्तियाँ।"[13] सामान्यतः "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में आसन्न मृत्यु के चरम आतंक के क्षणों में मानव-प्रवृत्तियों का विश्लेषण चित्रित किया

गया है। उपन्यास में कुल-मिलाकर तीन अध्याय हैं और तीनों में अलग-अलग प्रकार के तीन दृश्य अंकित हैं। प्रथम में बर्फ से ढँके हुए एक मकान का, दूसरे में बाढ की विभीषिका में लगभग अर्धक्षत नदी के पुलपर बसे एक बाजार का और तीसरे में जर्मन सैनिकों से पादाक्रांत एक बाजार का चित्र है। तीनों में ही मृत्यु का भय व्याप्त है। किन्तु भय का चित्रण करना ही इस उपन्यास का लक्ष्य नहीं है तो स्वातंत्र्य की खोज यहाँ भी मूल उद्देश्य प्रतीत होता है। "अपने अपने अजनबी" की सेल्मा "मृत्यु" को जीवन का सबसे बडा सत्य समझती है। किन्तु "योके" जीवन को अपने अस्तित्व के बोध को, सर्वाधिक महत्त्व देती है। अस्तित्त्व का बोध स्वतंत्रता की अनुभूति में ही है, इसीलिए वह स्वतंत्रता चाहती है।

उपन्यास की विशेषता और कथानक की परिसीमता का प्रयोग कौशल्य के साथ हुआ है। इसमें "अज्ञेय" की व्यक्तिगत विशिष्टता "प्रयोग की नवीनता" देखने को मिलती है। यह एक प्रतीकात्मक और दुःखान्त उपन्यास है। यह एक प्रथम आधुनिक तथा अस्तित्त्ववादी उपन्यास है। उन्होंने आधुनिकता के विज्ञान विरोधी पक्ष को गृहण किया है।

इसके माध्यम से "अज्ञेय" की एक नई रचना पध्दति का विकास हुआ है। यह उपन्यास मृत्यु की भयंकारिता से भरा पडा है। "अज्ञेय" का यह अंतिम उपन्यास अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों के कथानक के अनावश्यक विस्तार के दोष से बचा है। लेकिन वैचारिक बोझिलता इसमें आ गई है।

उपन्यासों में जीवनदर्शन :-

"शेखर : एक जीवनी" इस उपन्यास की मुख्य विशेषता इसकी व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि है। लेखक व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि के प्रकाश में ही आज के युग की समस्याओं के समाधान को ढूँढता है। इसमें व्यक्ति के महत्त्व को सबसे ऊपरी स्थान दिया है। व्यक्ति के विचारों को अगर स्वतंत्रता मिल जाती है तो उसका विकास हो सकता है। यहाँ "अज्ञेय" के विचारों पर मनोविश्लेषणवादी फ्रायड

के विचार दर्शन का परिणाम दिखाई देता है। अहं, भय, और लिंग संबंधी विचार व्यक्ति की मूल प्रेरणाएँ है। इन प्रेरणाओं पर किसी भी प्रकार का बंधन उन्हें मान्य नहीं है। बंधन तो अनिष्ट और अमंगल मनोभावों पर ही योग्य होते हैं।

"शेखर की सृष्टि करते हुए लेखक {श्री अज्ञेय} की दृष्टि एक विद्रोही और आतंकवादी व्यक्तित्त्व की मनोभूमि सम्भावना पर केन्द्रित रही है। शेखर अभिजात वर्ग का प्रतीक पुरूष है। वह टूटती हुई नैतिक रूढियों के बीच नीति के मूल-स्त्रोत की खोज करता है। वह समाज की खोखली सिध्द हो जानेवाली मान्यताओं के बदले व्यक्ति की दृढतर मान्यताओं की प्रतिष्ठा करना चाहता है। उसे जो सत्य दिखाई देता है उसे अनदेखा करके वह अपने को प्रवंचित नहीं करना चाहता। इसीलिए वह विद्रोही है। वस्तुतः शेखर को जो कुछ दिखाई पडा है वह आधुनिक मनोवैज्ञानिक एवं बौध्दिक चिन्तक के विकास का परिणाम है। शेखर निस्सन्देह एक आधुनिक रूचिसम्पन्न अभिजात पुरूष है, किन्तु उसके विद्रोही व्यक्तित्त्व का प्रेरक तत्व काम-भावना है।"[14] अहं, भय और लिंग संबंधी विचार जीवन की प्रेरणादायक शक्तियाँ है। इन शक्तियों को निंदनीय अथवा अशुभ मानना अनुचित और अन्यायपूर्ण है। व्यक्तिवादी विचारधारा में सामाजिक नियम और नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। इसमें व्यक्ति की बंधनरहित तथा मुक्त सत्ता की अपेक्षा की गई है। शेखर इसका उदाहरण है।

"नदी के दीप" उपन्यास मेगं भी फ्रायड के मनोविश्लेषणवादी विचार का प्रभाव दिखाई देता है। शेखर का विकसित रूप भुवन है। यहाँ भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्त्व दिया गया है। व्यक्तिगत विचारों को महत्त्व देनेवाले उपन्यासों के पात्र शिक्षित, आत्मकेंद्रित, स्वाभिमानी और विचारशील प्राणी होते हैं। इसमें मृत्यु, प्रकृति, समाज, ईश्वर, जीवन, जगत, स्त्री-पुरूष, विवाह, प्रेम और यौन संबंधी उनकी धारणाएँ उनके अपने जीवन-जगत वास्तव अनुभवों से निर्माण होती है। व्यक्ति को महत्त्व देनेवाले उपन्यासों में जीवन और जगत की समस्याओं

के समाधान और उनके उपयोग का मूल्य जानना व्यक्तिहित की भावना से हुआ है। "नदी के दीप" में "अज्ञेय" का व्यक्तिवादी कवि रूप ही दिखाई देता है। इस उपन्यास के दोनों पात्र व्यक्तिवाद और स्वच्छन्दतावाद को ही महत्त्व देते हैं। रेखा आर्थिक दृष्टि से अपने पैरो पर खडी है वह एक शिक्षित नारी है। अपने जीवन का निर्णय वह खुद की इच्छा के अनुसार करती है। "नदी के दीप" के रेखा, भुवन और गौरा अपने आप को जीवन प्रवाह में दीप की तरह उपमा योग्य बनाते है और व्यक्तिवाद का ही समर्थन करते है।

"मनोविज्ञान की इस पीठिका पर अज्ञेय के "अपने अपने अजनबी" की सृष्टि हुई है। योके और सेल्मा के बीच के इसी भेद के आधारपर इस रचना की कथावस्तु का प्रसार हुआ है। इससे इसके नामकरण की सार्थकता भी स्पष्ट है। योके सेल्मा के और सेल्मा योके के सिध्दान्त को स्वीकार नहीं करती तो आश्चर्य भी क्या है? किन्तु दोनों के बीच जो खाई बन जाती है, वह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है।"[15] साथ ही साथ "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में अन्य उपन्यासों की तरह सभी जगहों पर अस्तित्ववादी जीवनदृष्टि का परिचय मिलता है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के लिए पूरक हैं। अस्तित्ववादी विचारधारा का प्रारंभ हसरेल, हेडेगर और डेनिशचिन्तक कीर्केगार्द, नीत्शे, यास्पर्स, दस्तोवस्की, मार्शल, सार्त्र आदि की विचारसरणी में मिलता है। अस्तित्व की स्थिति तत्त्व से पहले है। जिसके कारण मनुष्य की जागतिक स्थिति स्पष्ट होती है। इसप्रकार अस्तित्ववादी विचार की भूमि पर मनुष्य, जीवन के जीवित संदर्भ में सोचता है।

इस उपन्यास में अस्तित्ववादी विचारों के कुछ प्रतीकों का होना स्वीकार किया गया है। इसमें अस्तित्ववाद के साधन प्राप्त है। सार्त्र के अनुसार मनुष्य का अर्थ है आजादी। इस आजादी का अनुभव मनुष्य के मन में तब होता है जब वह अपनी जीवन प्रक्रियाओं के बारे में ध्यान से चिंतन मनन करता है और अनुमान निकालता है। यूरोपिय साहित्य में अस्तित्ववाद की बहुचर्चित प्रवृत्ति दिखाई देती है। अस्तित्ववादो में तर्क को अनुपयोगी समझा जाता है। "अज्ञेय" पर सार्त्र का प्रभाव दिखाई देता है। मनुष्य के पूर्ण अस्तित्व में विश्वास रखना

इस विचारधारा का मुख्य सूत्र है।

जीवन-दर्शन :-

"अज्ञेय" छायावाद के बाद हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक चर्चित और विवादास्पद रचनाकार है। महत्त्वपूर्ण भी वे रहे है। लेकिन अज्ञेय का साहित्य पढते समय मुझे हमेशा यह अहसास होता रहा है कि, उनके साहित्य में प्रतिफलित आशय बहुत इकहरा और आत्मनिष्ठ है। व्यक्तिस्वातंत्र्य अज्ञेय साहित्य का केन्द्रिय विषय रहा हैं। उनके साहित्य में व्यक्ति स्वातंत्र्य के मूल्य का प्रतिफलन परिस्थितियों और शक्तियों के साथ एकत्रित प्रक्रिया में न होकर एक निरपेक्ष सत्ता अधिक है। वे इसे व्यक्ति की मूलभूत अस्तित्त्वगत विशेषता मानते रहे हैं। अज्ञेय की चिन्ता व्यक्ति-जीवन की चिन्ता है, सामाजिक जीवन की नहीं। लेकिन जब हम अज्ञेय के कथा साहित्य को परखते हैं तो पाते है कि उसमें उस भारतीय समाज को साहित्य का विषय बनाया ही नहीं गया है, जो जातीय-प्रतिभा और समन्वित संस्कृति की संभावनाओं को धारण करता है। वे अपने साहित्य का विषय उस समाज को बताते हैं कि जिसका संपूर्ण भारतीय समाज और संस्कृति के साथ संबंध अनुषंगिक है।

अज्ञेय का साहित्य पढते समय समाजे के एक विशिष्ट वर्ग का बोध होता है। यह समाज शिक्षित लोगों की सोसायटी है जिसका रूप बहुत पुराना नहीं है। भारत में यह नया प्रबुध्द अभिजात वर्ग पश्चिमीकरण के प्रभाव स्वरूप अस्तित्त्व में आया है। अज्ञेय के साहित्य में विद्यमान विद्रोह, आत्म-चेतना, बेचैनी और आत्मरक्षा की प्रवृत्तियाँ तथा नैतिक और बौध्दिक समस्याएँ नहीं हैं। उनके संपूर्ण साहित्य में एक ऊँची, तटस्थ गौरवशाली मुद्रा विद्यमान है।

"शेखर : एक जीवनी" हिन्दी का पहला मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें शेखर का मनोविश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। वह अपने "अहं-वाद" की अग्नि में सबसे करूणोत्पादक आहुति अपने प्रेम की ही दे रहा है -

शशि के प्रेम की। उसका अहंकार उसे किसी के भी सामने झुकने से रोकता है। वह सबसे पूजित होना चाहता है और शेखर को समर्पण की भावना नारी के प्रति तो कतई स्वीकार नहीं । "अज्ञेय प्रेम को कोई महत्त्व नहीं देते। प्रेम को वे एक आदर्श मानते हैं, जो व्यावहारिकता की वस्तु नहीं। वासना को वे वास्तविकता मानते हैं।"[16]

"शेखर : एक जीवनी" के शेखर का चरित्र व्यक्तिपरक है और लेखक स्वयं भी यह दावा नहीं कर सकता है कि, उसके चरितनायक के स्वर में लेखक के युग का स्वर बोलता है। शेखर के मानसपर सबसे अधिक प्रभाव यौन भावनाओं का है। रेखा, भुवन, गौरा और चन्द्रमाधव प्रत्येक का अपना एक विशिष्ट रूप है - विशिष्ट दिशा है। कोई भी पात्र किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करता। उनका चिंतन खुद का है, वे अपने जीवन के बारे में सोचते हैं। किसी वर्ग, समाज एवं युग का चिन्तन वे नहीं करते।

"अपने अपने अजनबी" में भी इसीप्रकार का व्यक्तिपरक चित्रण हुआ है। मृत्यु से सतत संघर्षशील प्राणी समाज की बात करे भी तो कैसे? संपूर्ण उपन्यास में मृत्यु का भयावह वातावरण चित्रित है।

"अज्ञेय" के उपन्यासों में जीवन-दर्शन की विविधताएँ :-

"शेखर : एक जीवनी" का कथानक शेखर का आत्मविश्लेषण ही है। इसके कथानक की मौलिकता तथा महत्त्व "शिशु तथा बालमानस की सूक्ष्म तरंगो, कौतुहल और जिज्ञासाओं, सहज प्रवृत्तियों, उस पर पड़नेवाले - प्राणी - प्रकृतिगत परिवेश के सूक्ष्म प्रभावों और माँ-बाप, शिक्षकों आदि के अमनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहारों से उत्पन्न विकारों के मनोविज्ञान सम्मत सूक्ष्म विश्लेषण के कारण है।"[17] हर घटना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं एक कलाकार के हृदयपर पड़नेवाले असर को इसमें दिखाया गया है। शेखर के चारित्रिक गुण दृढता, निर्भीकता और स्वाभिमान कैसे बढता ही जाता है इसे यहाँ स्पष्ट किया गया है। माँ का स्वभाव छंद ध्वंसात्मक बनता है। परंतु उसे सहानुभूति देकर कोमल बनाती है।

शेखर जन्म से ही जिज्ञासू एवं बौध्दिक विश्लेषण करनेवाला है। शेखर की जिज्ञासाएँ जब पूरी नहीं होती तब धीरे-धीरे उसकी मानसिकता बदलती जाती है। माँ का वात्सल्य, बहन के प्रति प्रेम, सैक्स आदि से किशोर मन में पैदा होनेवाली भावना और वासना के घात-प्रतिघात शेखर बहुत सूक्ष्मता से अंकित करता है। धीरे-धीरे उसमें विद्रोह की वृत्ति बढती जाती है। उसका विद्रोह किसी एक वर्ग, संस्था या समाज के प्रति नहीं है। उसका विद्रोह धर्म, रूढियों के प्रति भी नहीं है। मानो विद्रोह ही उसका धर्म है। वह अपने स्वयं के प्रति विद्रोही है। एक ओर यथास्थितिवादी, समाज को ज्यों का त्यों रखनेवाली विचारधारा है। तो दूसरी ओर उसे पूरी तरह से बदल देनेवाली क्रांतिकारी मानवतावादी विचारधारा है। इन दो विचारधाराओं के संघर्ष और द्वंद्वात्मकता से शेखर के चरित्र का निर्माण हो जाता है।

शेखर के चरित्र का विकास होता जाता है और इसी विकास के साथ-साथ उसमें एक ओर नैतिक दृष्टि का भी विकास होता है और दूसरी ओर सौन्दर्य बोध का। शेखर के व्यक्तित्त्व में विद्रोह चेतना एवं सौन्दर्य चेतना दोनों की भी प्रबलता दृष्टिगोचर होती है। शशि "शेखर : एक जीवनी" का महत्त्वपूर्ण एव प्रभावशाली चरित्र है। शशि ही शेखर के निर्माण में स्वयं शेखर की ओर समर्पित हो जाती है और इसी आत्मोत्सर्ग में वह नारीत्त्व की सिध्दि प्राप्त करती है। "शेखर : एक जीवनी" में आत्म-कथानक शैली के रूप में निर्मित प्रौढ कथा-रूप मिलता है। "शेखर : एक जीवनी" एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अपने हृदय में रूढिगत सिध्दांतो तथा तद्जनिक भावनाओं के प्रति एक अदम्य विद्रोह भावना पाता है। उसके जीवन का विकास उसकी सतस्त जागरूकता के साथ होता है। वह अपने बचपन की अनेक घटनाओं का लेखा-जोखा करता है। उसकी यह तर्क-प्रवृत्ति उसकी अहं-भावना का एक अंग है। उसका अहं जहाँ एक ओर उसके चरित्र के निर्माण और विकास में सहायक हुआ है, वहाँ उसके कारण उसे अहंवादी तक करार कर दिया जाता है। परंतु वास्तव में उसकी अहं-भावना उसके आत्मविश्वास

का प्रतिरूप है।"[18] शेखर के चरित्र में मनोविज्ञान की अन्य प्रवृत्तियाँ भय, काम, अहं एव कुंठा का विकसित रूप देखने को मिलता है। "शेखर : एक जीवनी" की शिल्प की दृष्टि से एक अलग प्रकार की विशेषता है। विविध स्थलों पर इसमें शैली विवरणात्मक, गीतात्मक तथा लघु-कथात्मक रूप में दिखाई देती है। इन सभी शैलियों के द्वारा लेखक की सूक्ष्म-विश्लेषणात्मक शक्ति का दर्शन हो जाता है। शैली के अतिरिक्त अज्ञेय ने अपने इस उपन्यास में आवश्यकतानुसार यात्रा विवरण, रेखाचित्र, प्रतीक-पध्दति, पत्र-शैली का प्रयोग किया है।

"नदी के द्वीप" अज्ञेय द्वारा लिखा गया दूसरा उपन्यास है। यह खण्ड-रूपों में लिखी गयी एक कथा है, जो चार प्रधान, पात्र-पात्रियों के चरित्र को आधार बनाकर चलती है। "नदी के द्वीप" के कथानक में "दुःख" या "पीडा" के वातावरण का दर्शन अभिव्यंजित हुआ है। "नदी के द्वीप" में आये चरित्रों की भी अपनी विशेषता है। इसका नायक भुवन शेखर के विकसित रूप का ही प्रतिबिंब है। शशि का स्थान रेखा ने ले लिया है, लेकिन रेखा का चरित्र शशि से अधिक विकासवान और पुष्ट है। उपन्यास के प्रारंभ से लेकर अंत तक इसी प्रधान कथा-सूत्र की प्रमुखता है। आत्म-विचार और दर्शन की दृष्टि से "नदी के द्वीप" उपन्यास का समाप्ति भाग सबसे सशक्त अंश है। गौरा को पत्र लिखते-लिखते एकाएक भुवन. उद्विग्न हो उठता है - अंत में वह "अनुद्विग्न भाव से" पत्र फाड़ डालता है। "नदी के द्वीप" में अज्ञेय हमारे सामने मौलिक शैलीकार के रूप में आते है। भाषा का निखार इस उपन्यास में दर्शनीय है। इस उपन्यास की भाषा सर्वत्रही उन्नत, आकर्षक एवं प्रभावशाली है। "नदी के द्वीप" उपन्यास में पत्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। पत्रात्मकता इस उपन्यास की प्रमुख विशेषता है। खण्ड-कथा रूप में लिखे गये उपन्यासों में "नदी के द्वीप" एक महत्त्वपूर्ण कृति है।

"अपने अपने अजनबी" मृत्यु-साक्षात्कार को विषय बनाकर लिखा गया अज्ञेय का तीसरा उपन्यास है। हिन्दी में सर्वथा एक नये प्रकार का उपन्यास

होने का गौरव लेकर आया है। इस उपन्यास का कथानक संक्षिप्त होते हुए भी गहन व्यापकत्त्व से युक्त है। मृत्यु के साक्षात्कार में जीवनदर्शन का विवेचन ही लेखक का मुख्य उद्देश्य है। इसकी विशिष्टता आरम्भ से ही भाषा के स्तर पर भी लक्षित होने लगती है - जिस भाषा का यहाँ उपयोग किया गया है, वह अस्तित्त्ववादी चिन्तन से जुडी हुई है। स्वतन्त्रता, वरण, विसंगति, मृत्युबोध आदि शब्द उक्त भाषा की विशिष्ट संज्ञाएँ है। अस्तित्त्ववादी साहित्य की परम्परा की अनुगमन इसकी रचना करते वक्त किया गया है। "अपने अपने अजनबी" का पात्र प्रत्येक स्थिति में अस्तित्त्ववादो पाया जाता है।

वृध्दा सेल्मा और युवती योके बर्फ के नीचे घर में बन्दी हो गयी हैं और मृत्यु की छाया में जीवन बिताने को बाध्य है। बर्फ में दबी सेल्मा और योके की मृत्यु के क्षण की प्रतीक्षा के पूर्व का यह चित्रण, अंत में मृत्यु के प्रति विचारों का दन्द दर्शाता है। मृत्यु का सत्य दार्शनिक चिन्ता के केन्द्र में रहा है। अस्तित्त्ववाद इसी चिन्ता से प्रेरित आधुनिक दर्शन है। "अपने अपने अजनबो" का कथानक पर्याप्त क्षीण है और इस कथा-क्षीणता का कारण उपन्यास की चरित्र-प्रधानता, विचार-बहुलता तथा वातावरण-परिसीमा एवं घटनाओं की सीमितता है। "अपने अपने अजनबी" पूर्ण रूप से डायरी शैली में लिखा गया है। डायरी के माध्यम से हमें योके और सेल्मा के चारित्रिक संघर्ष का परिचय हो जाता है। शैली एवं शिल्प दोनों की दृष्टियों से इसमें नवीनता दिखाई देती हे, प्रयोग को दृष्टि से भी इसमें नवोनता है। इस उपन्यास के पात्र विदेशो है, स्थान विदेशी हे, एवं संस्कृति भी विदेशो है। मानव जीवन आज जिस खतरे के दौर से गुजर रहा है, उसकी ओर इसमें संकेत है। "अपने-अपने अजनबो" का कथानक निश्चित रूप से अतिसंक्षिप्त एवं प्रवाहपूर्ण है, लेकिन उसमें दार्शनिकता है। इसमें पाठक की उत्सुकता बनी रहती है।

निष्कर्ष :-

व्यक्ति विकास के जीवन मूल्यों में आस्था रखनेवाले तथा सोद्देश्य साहित्य रचना करनेवाले उपन्यासकारों में से "अज्ञेय" एक है। इस कारण व्यक्ति विकास की विशिष्ट जीवन-दृष्टि का समावेश उनकी रचनाओं में हुआ दिखाई देता है। "अज्ञेय" के "शेखर : एक जीवनी", "नदी के द्वीप" तथा "अपने अपने अजनबी" इन तीनो उपन्यासो में व्यक्तिवादी जीवन-दर्शन दिखाई देता है। चिंतन की मुख्य धारा "अज्ञेय" ने अपने उपन्यासों मे अपनायी है। उनके तीनों उपन्यासों में प्रेम की नवीन नैतिकता तथा आत्मपीड़ा का चित्रण, विद्रोह में सिध्दि का समर्थन, व्यक्तिवादी की प्रतिष्ठा और स्वातंत्र्य की खोज, विद्रोह की भावना का प्राबल्य, फ्रायडीयन मनोविज्ञान का प्रभाव, कालानुभवसंबंधी धारणा, मृत्युबोध या मृत्यु से साक्षात्कार की समस्या, अस्तित्ववाद की स्थापना आदि विषयों का चित्रण हुआ है।

"अज्ञेय" ने अपनी साहित्यकृतियों की रचना करते समय अपने दृष्टिकोण का आधार ही अधिक न्यायोचित माना है। वास्तव में रचनाकार अपनी रचना से कितना तटस्थ रहता है इस पर उसका मूल्यांकन निर्भर करता है, लेकिन अपनी कृति से तटस्थ रहने में अज्ञेय पूरी तरह से सफल नहीं हुए है, ऐसा हम मानते है। "अज्ञेय" ने अपने उपन्यासों में जो पात्रों की निर्मिती की है वहाँ वे तटस्थ नहीं रहे है, जैसे कि शेखर का बचपन काल उपन्यासकार का अपना बचपनकाल है। भुवन के चरित्र में भी व्यक्तिगत भावनाओं को अधिक व्यक्त किया है। "अपने अपने अजनबी" में भी वे पूरी तरह तटस्थ रहने में सफल हो गये है।

संदर्भ :-

1· हिन्दी का गद्य साहित्य - डॉ·रामचन्द्र तिवारी
सं·1668, पृ·548

2· अज्ञेय - साहित्य : प्रयोग और - मूल्यांकन डॉ·केदार शर्मा
सं·1969, पृ·16

3· हिन्दी के साहित्यनिर्माता "अज्ञेय" - प्रभाकर माचवे
सं·1991, पृ·9

4· आत्मनेपद - अज्ञेय,
सं·1960, पृ·181

5· अज्ञेय : चिन्तन और साहित्य - डॉ·प्रेमसिंह
सं·1987, पृ·139

6· आत्मनेपद अज्ञेय,
सं·1960, पृ·29

7· आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवत्ता नवलकिशोर
सं·1977, पृ·86

8· हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास - डॉ·प्रतापनारायण टंडन
सं·1974, पृ·171

9· वहीं पृ· 172

10· अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि - सत्यपाल चुघ
सं·1965, पृ·32

11· अज्ञेय का कथा साहित्य - ओम प्रभाकर
सं·1966, पृ·53

12· हिन्दी का गद्य साहित्य - डॉ·रामचन्द्र तिवारी,
सं·1968, पृ·558

13· "अपने अपने अजनबी" - अज्ञेय, आवरण पृष्ठ

14·	हिन्दी का गद्य साहित्य -	डॉ·रामचन्द्र तिवारी सं·1668, पृ·556
15·	अज्ञेय साहित्य : प्रयोग और मूल्यांकन	डॉ·केदार शर्मा सं·1969, पृ·90
16·	अज्ञेय की औपन्यासिक कृतियाँ -	कुसुम त्रिवेदी सं·1976, पृ·70
17	अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि -	सत्यपाल चुघ सं·1965, पृ·33
18·	हिन्दी उपन्यास में कथा - शिल्प विकास -	डॉ·प्रतापनारायण टंडन सं·1964, पृ·332